आईआईएम रांची में यंग चेंजमेकर्स प्रोग्राम शुरू, विद्यार्थी आदिवासी गांवों में जाकर चुनौतियों को समझेंगे

नई पीढ़ी में सामाजिक जिम्मेदारी की भी गहरी समझ जरूरी: चीफ जस्टिस

कार्यक्रम

- सकारात्मक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक बनने पर जोर दिया
- कार्यक्रम के दूसरे दिन आज प्रतिभागी रासाबेड़ा गांव जाएंगे

रांची, प्रमुख संवाददाता। भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), रांची में 'यंग चेंजमेकर्स' प्रोग्राम की शुरुआत शुक्रवार को हुई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि झारखंड हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस संजय कुमार मिश्रा ने अपने संबोधन में ऐसे व्यक्तियों की पीढ़ी तैयार करने की अहमियत पर जोर दिया, जिन्हें ज्ञान और कौशल के साथ सामाजिक जिम्मेदारी की भी गहरी समझ हो।

सकारात्मक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक बनने पर जोर: चीफ जस्टिस ने ग्रामीण समुदायों में विद्यार्थियों को एक व्यापक अनुभव प्रदान करने के लिए 'यंग चेंजमेकर्स' प्रोग्राम की सराहना की, जहां वे समाज के वंचित वर्गों के समक्ष आनेवाली चुनौतियों को प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं। उन्होंने सकारात्मक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक बनने पर जोर दिया।

आईआईएम रांची में 'यंग चेंजमेकर्स' प्रोग्राम की शुरुआत शुक्रवार को हुई। कार्यक्रम का उद्घाटन करते झारखंड हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस संजय कुमार मिश्रा।

युवाओं को धौनी से सीखना चाहिए: क्रिकेटर महेंद्र सिंह धौनी का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि वह न सिर्फ एक अच्छे खिलाड़ी हैं, बल्कि अच्छे नेतृत्वकर्ता भी हैं। युवाओं को उनसे यह कौशल सीखना चाहिए।

सामूहिक दृष्टि जरूरी: मुख्य न्यायाधीश ने प्रतिभागियों को दिल से इस अवसर को गले लगाने और कार्यक्रम के दौरान मिलनेवाले लोगों के अनुभवों से सीखने व उनकी समस्याओं को सुलझाने की क्षमताओं को बढ़ावा देने का आग्रह किया। उन्होंने एक बेहतर दुनिया बनाने में सहयोग और सामूहिक दृष्टि की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम में प्रो रंजीत, प्रो गौरव मराठे, प्रो जयंत त्रिपाठी, शिक्षकगण व बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद थे। संचालन प्रो अंशुमन हजारिका ने किया।

समुदायों की चुनौतियों से जुड़ने पर दिया जोर

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), रांची के निदेशक प्रो दीपक कुमार श्रीवास्तव ने संस्थान की सामाजिक रूप से उत्तरदायी होने की प्रतिबद्धता और आदिवासी समुदायों के सामने आनेवाली चुनौतियों से जुड़ने पर जोर दिया। प्रो श्रीवास्तव ने शैक्षणिक ज्ञान के साथ-साथ जनजातीय भाषाओं में वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के एकीकरण और सामाजिक बुद्धिमत्ता पर बात की।

प्रतिभागी समस्याओं का निदान प्रस्तावित करेंगे

कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूली छात्रों को आदिवासी गांवों के सामने आनेवाली चुनौतियों का पता लगाने व व्यावहारिक समाधान विकसित करने का अनूठा अवसर प्रदान करना है। तीन दिवसीय कार्यक्रम के दूसरे दिन शनिवार को प्रतिभागी रासाबेड़ा गांव जाएंगे। वहां ग्रामीणों से समस्याओं को जानेंगे। शिविर से मिले अनुभवों को समापन कार्यक्रम में प्रस्तुत करेंगे। समस्याओं का निदान भी वे प्रस्तावित करेंगे।

Hindustan_27.05.2023_Pg. 08